# विशिष्ट बालक का अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार

**DR. SUMAN VERMA,**

**ASSOCIATE PROFESSOR, DEPTT. OF EDUCATION,**

**ARYA KANYA MAHAVIDYALAYA, HARDOI (UTTAR PRADESH)**

# विशिष्ट बालक का अर्थ

## (Meaning of Exceptional Child)

किसी भी सामान्य विद्यालय अथवा कक्षा में पढ़ने वाले बालक-बालिकाओं में से अधिकांश बालकों को सामान्य अथवा औसत बालक - बालिका कहा जा सकता है। इन बालकों की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, तथा संवेगात्मक विशेषतायें लगभग एक समान होती हैं जिसके कारण इनकी शैक्षिक समस्याओं की प्रकृति तथा प्रकार (Nature and Type) भी एक जैसा होता है। परन्तु विद्यालय अथवा कक्षा में कुछ बालक - बालिकायें ऐसे भी होते हैं जो इन सामान्य बालकों से शारीरिक, मानसिक, शैक्षिक अथवा सामाजिक दृष्टि से पर्याप्त भिन्नता रखते हैं। प्रायः देखा गया है कि सौ बालकों के समूह में से लगभग पचास बालक किसी न किसी प्रकार की ऐसी समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं कि उनकी शिक्षा के लिए कुछ विशिष्ट प्रकार की शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, भौतिक तथा सामाजिक व्यवस्थाओं की आवश्यकता होती है। वास्तव में इन बालकों की शैक्षिक, बौद्धिक, संवेगात्मक, भौतिक, सामाजिक अथवा व्यक्तित्व सम्बन्धी परिस्थितियाँ सामान्य बालकों से कुछ भिन्न प्रकार की होती हैं जिसके कारण इन बालकों पर अलग से विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इनमें से भी लगभग दस प्रतिशत बालक शारीरिक अथवा मानसिक दृष्टि से सामान्य बालकों से इतने भिन्न होते हैं कि उनकी समस्याओं का समाधान करने के लिए विशेष शैक्षिक प्रयासों की आवश्यकता होती है। इस तरह के बालकों की समस्याओं को भलीभाँति समझकर विशिष्ट ढंग से समाधान किया जाना अत्यन्त आवश्यक होता है। क्योंकि ऐसे बालक सामान्य बालकों से शारीरिक, मानसिक अथवा संवेगात्मक दृष्टि से पर्याप्त भिन्न होते हैं इसलिए इन्हें अपवादात्मक बालक (Exceptional Children), असाधारण बालक (Unusual Children) अथवा विशिष्ट बालक (Special Children) कहा जाता है।

## अवधारणा -

व्यक्तियों में परस्पर विभिन्नताओं का होना स्वाभाविक ही है। वस्तुतः इस संसार में कोई भी दो व्यक्ति पूर्णरूपेण एक समान नहीं होते हैं। यही कारण है कि किसी विद्यालय अथवा कक्षा में शिक्षा प्राप्त करने के लिए जो बालक - बालिकाएँ आते हैं, उनमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक तथा संवेगात्मक आदि अनेक दृष्टियों से अनेक अंतर दृष्टिगोचर होते हैं। कुछ बालकों को सामान्य अथवा औसत बालक कहा जा सकता है, जबकि कुछ बालक तीव्र बुद्धि वाले होते हैं, कुछ बालक मंद बुद्धि के होते हैं, कुछ बालक विभिन्न प्रकार के शारीरिक कमियों से युक्त होते हैं तथा कुछ बालक विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त होते हैं।

# विशिष्ट बालक से संबंधित परिभाषाएं

## (Exceptional Children Releted Definitions)

विशिष्ट अथवा अपवाद से सामान्यतौर पर तात्पर्य असामान्य (Unusual) अथवा दुर्लभ (Rare) से होता है। विशिष्ट अथवा अपवादात्मक बालक शब्द का प्रयोग विद्वानों ने भिन्न-भिन्न ढंग से किया है। कतिपय विद्वानों ने इस शब्द का प्रयोग असाधारण प्रतिभा के लिए, कुछ विद्वानों ने सुस्त बालकों के लिए तथा कुछ ने शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े बालकों के लिए किया है। वास्तव में चिकित्सीय, मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक दृष्टि से किये जाने वाले विभिन्न वर्गीकरणों को विशिष्ट बालकों के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मनोवैज्ञानिकों ने विशिष्ट बालक शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास तो किया है, परन्तु कोई सर्वमान्य परिभाषा प्रस्तुत नहीं की जा सकी है। फिर भी मनोवैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि विशिष्ट बालक से तात्पर्य उस बालक से होता है जो विकास के विभिन्न पक्षों में सामान्य से भिन्न है तथा जिसके लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वास्तव में विशिष्ट बालक शब्द एक बृहद पद (Umbrella like term) है जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार की असामान्यताओं से युक्त बालकों के अनेक समूह समाहित रहते हैं।

**क्रुकशैंक के अनुसार**-

"विशिष्ट बालक वह है जो बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक अथवा संवेगात्मक दृष्टि से सामान्य समझी जाने वाली वृद्धि तथा विकास से इतना भिन्न है कि वह नियमित विद्यालय कार्यक्रम से अधिक लाभ नही उठा सकता है तथा विशिष्ट कक्षा अथवा पूरक शिक्षण व सेवाएँ चाहता है।"

## एक सामान्य बालक की कुछ प्रमुख सामान्य विशेषताएं-

1-यह बालक बहुत ज्यादा महत्वाकांक्षी नहीं होते हैं बल्कि स्तर और शिक्षा के कारण मध्यम सोच रखते हैं।

2-सामान्य बालकों की शारीरिक बनावट अच्छी होती है।

3-इन बालकों का शरीर स्वस्थ होता है।

4-यह बालक उभय मुखी होते हैं।

5-इनमें कोई मानसिक बीमारी नहीं होती है।

6-यह बालक घर स्कूल और समाज में अच्छा समायोजन रखते हैं।

7-ऐसे बालकों की बुद्धि लब्धि 90 से 110 तक होती है।

8-ऐसे बालक अपने दोस्तों से अच्छी तरह से समायोजित रहते हैं।

9-ऐसे बालक सकारात्मक संवेग हो जैसे प्रेम आनंद का अनुभव अवांछित रूप से नहीं करते हैं।

10-इनकी शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होती है यह असफलता का मुंह नहीं देखते हैं।

# विशिष्ट बालक

## शारीरिक रूप से विशिष्ट

1) दृष्टि विकलांग बालक
2) वाणी विकलांग बालक
3) श्रवण दुर्बल बालक
4) गत्यात्मक अक्षम बालक

## मानसिक रूप से विशिष्ट

1) प्रतिभा सम्पन्न बालक
2) सृजनात्मक बालक
3) मानसिक मंद बालक

## शैक्षित रूप से विशिष्ट

1) शैक्षिक ग्रीव बालक
2) शैक्षिक रूप से पिछड़े बालक
3) सीखने मे अयोग्य बालक

## सामाजिक रूप से विशिष्ट

1) कुसमायोजित बालक
2) समस्यात्मक बालक
3) बाल अपराधी
4) विचलित बालक
5) नशे के आदी बालक
6) संवेगात्मक रूप से विचलित बालक

## 1. बौद्धिक दृष्टि से विशिष्ट बालक
**(Intellectual Exceptional Children)**

(i) प्रतिभाशाली बालक (Gifted Children)
(ii) मंदबुद्धि बालक (Mentally Retarted Children)

## 2. शैक्षिक दृष्टि से विशिष्ट बालक
**(Educationally Exceptional Children)**

(i) तीव्र बालक (Accelerated Children)
(ii) पिछड़े बालक (Backward Children)

## 3. शारीरिक दृष्टि से विशिष्ट बालक
**(Physically Exceptional Children)**

(i) बहरे बालक (Deaf Children)
(ii) कम सुनने वाले बालक (Hard of Hearing Children)
(iii) अन्धे बालक (Blind Children)
(iv) दृष्टिदोष से युक्त बालक (Partially Sighted Children)
(v) वाणी दोष से युक्त बालक (Children with Speech Defects)
(vi) विकलांग बालक (Crippled Children)

## 4. समस्यात्मक बालक (Problem Children)

(i) सामाजिक दृष्टि से कुसमायोजित बालक (Socially Maladjusted Children)
(ii)संवेगात्मक असंतुलित बालक (Emotionally Disturbed Children)
(iii) अपराधी बालक (Juvenile Children)

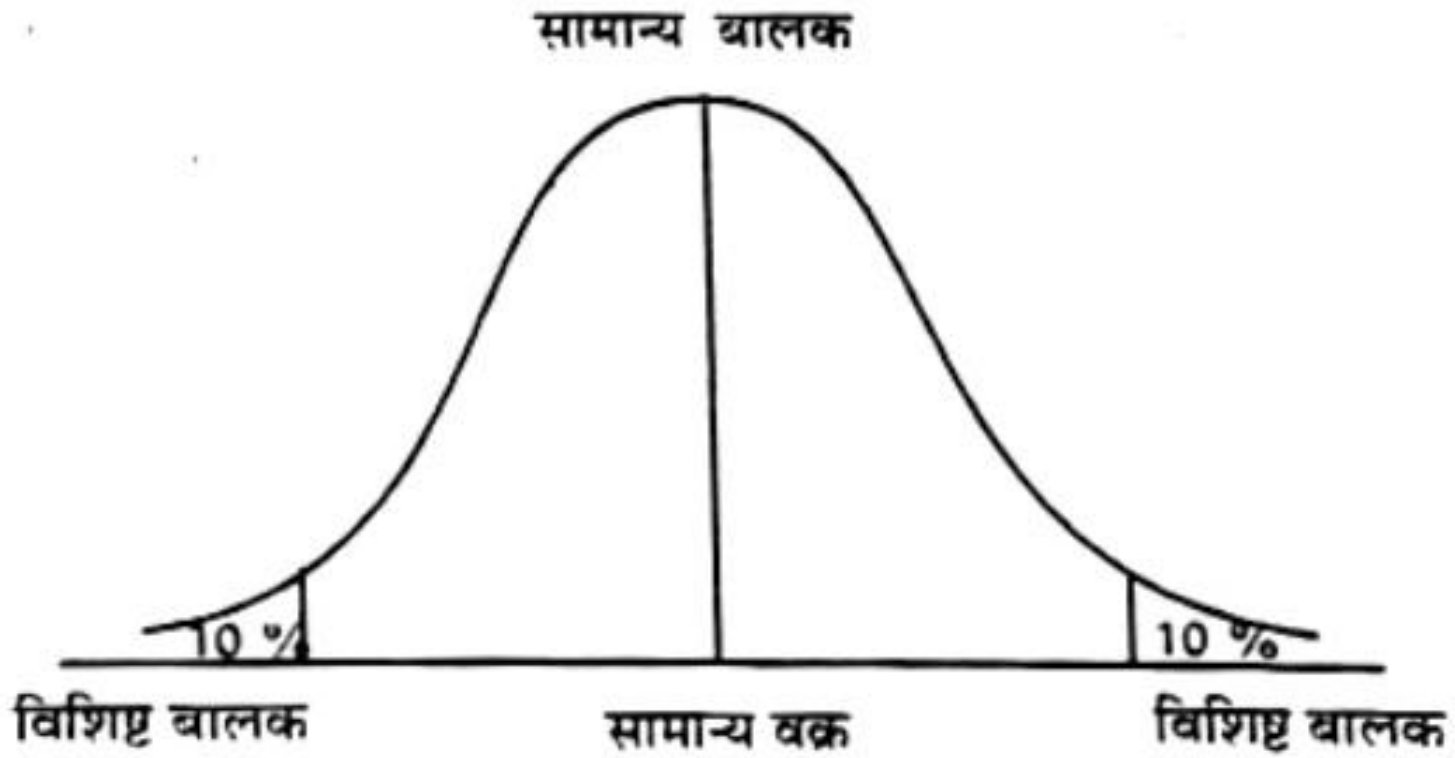
सामान्य बालक
10 %
10 %
विशिष्ट बालक
सामान्य वक्र
विशिष्ट बालक